1-4

अभिनंदन और उद्देश्य

प्रारंभिक अभिनंदन (1, 2)

[1]यहूदा की ओर से जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है, उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिये सुरक्षित हैं। [2]दया और शान्ति और प्रेम तुम्हें बहुतायत से प्राप्त होता रहे।

इस पत्री के प्रारंभिक शब्द अन्य सामान्य पत्रियों के शब्दों के समान ही हैं। लेखक ने अपना परिचय दिया, अपने श्रोताओं को संबोधित किया, और अपनी शुभकामनाएं प्रस्तुत कीं।

आयत 1. यहूदा ने अपनी पत्री का आरंभ अपने आप को **यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई** कहकर किया। जिस "यहूदा" का उल्लेख हुआ है वह संभवतः प्रभु का भाई है (गलतियों 1:19; याकूब 1:1)। यीशु की सेवकाई के आरंभिक दिनों में, उसके भाइयों को लगता था कि उसका मस्तिष्क फिर गया है (मरकुस 3:21, 31; यूहन्ना 7:5), परन्तु बाद में वे लोग विश्वासी बन गए (प्रेरितों 1:14; 1 कुरिन्थियों 9:5)। यहूदा और याकूब की पत्रियों का अस्तित्व में होना, साथ ही प्रेरितों में सुझाव देने वाले शब्द और प्रेरितों के बाद के कुछ लेखों में दिए गए संकेतों के कारण कुछ यह तर्क देते हैं कि यीशु के परिवार का यरूशलेम की आरंभिक कलीसिया के प्रतिदिन के जीवन में जितना पहचाना गया है उससे अधिक प्रभाव था।[1]

मत्ती 13:55 में भाइयों के नाम हैं "याकूब और यूसुफ और शमौन और यहूदा।" मरकुस के वृतांत में यह "याकूब और योसेस और यहूदा और शमौन" (मरकुस 6:3) है। इस भिन्न क्रम का कोई संतोषजनक स्पष्टिकरण नहीं है। जो स्पष्ट है वह यह है कि यहूदा अपना परिचय प्रभु का भाई कहकर दे सकता था। प्रतीत होता है कि यह उस दावे से अधिक होता जो वह करना चाहता था। वह "यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई" होने तक में संतुष्ट था। यह कि उसने अपना परिचय याकूब के संदर्भ में दिया संकेत करता है कि यहूदी मसीही दायरों में एक अधिकारी के रूप में याकूब की यहूदा की तुलना में अधिक पहचान थी। फिर भी, यह स्पष्ट है कि यदि याकूब का कोई उल्लेख न भी होता, तो भी यहूदा की आशा थी कि वह अपने नाम मात्र से पहचान लिया जाता। उसने अपने पाठकों को यह स्पष्टिकरण देने का कोई प्रयत्न नहीं किया कि क्यों उसके पास निर्देश देने और सुने जाने का अधिकार था।

जिस रीति से यहूदा ने अपने पाठकों को संबोधित किया वह असामान्य है। उसने दो क्रियाओं का प्रयोग पूर्ण काल में किया। **प्रिय** (ἠγαπημένοις, *एगापेमेनोइस)* जिसका शब्दार्थ है "जिससे प्रेम किया गया" और सुरक्षित (τετηρημένοις, *टेटेरेमेनोइस)* जिसका शब्दार्थ है "जिसे रखा गया।" यूनानी में यह पूर्ण काल उनके वर्तमान स्तर को दिखाता है। यहूदा के पाठक वे थे जो **परमेश्वर पिता** के प्रेम की दशा में खड़े थे। इसके अतिरिक्त वे **यीशु मसीह** द्वारा सुरक्षा की दशा में रखे गए थे।

बुलाए हुए का तात्पर्य यह नहीं है कि परमेश्वर के साथ संबंध की दशा में यहूदा के पाठक निष्क्रिय थे। अपनी सक्रिय सहभागिता, उनके सुसमाचार को सुनने और प्रतिक्रिया देने के द्वारा, वे "बुलाए गए" हो गए थे। आई. हॉवर्ड मार्शल ने लिखा कि "शब्द ['बुलाए गए'] मसीहियों के लिए उनके एक विशेष गुण के कारण नाम हो सकता है, कि परमेश्वर ने उन्हें अपने लोग होने के लिए बुलाया है और उन्होंने ऐसे बुलाए जाने की प्रतिक्रिया दी। (रोमियों 1:6, 7; 8:28; 1 कुरिन्थियों 1:2, 24; तुलनात्मक प्रकाशितवाक्य 17:14)।"[2]

यहूदा का पूर्ण काल प्रयोग करना पत्री में प्रारंभिक संकेत है कि उसे पाठकों के प्रभु में खड़े होने का पूरा विश्वास था। उन्हें उसके विश्वास को बाँटना था। क्योंकि वे परमेश्वर द्वारा सुरक्षित रखे जाने और प्रेम की दशा में खड़े थे, इसलिए हाल ही में आए शिक्षकों के पास उन्हें देने के लिए कुछ भी नहीं था। उनके पास उन प्रेरितों, जिन्होंने मूल रूप से उन्हें सुसमाचार सुनाया था, की गवाही से बढ़कर किसी प्रकाशन का कोई दावा नहीं था।

आयत 2. यहूदा ने आम अभिनंदन "अनुग्रह" (χάρις, *चारिस)* का, जिसे हम पौलुस की पत्रियों में और पतरस की दोनों पत्रियों में पाते हैं, प्रयोग नहीं किया। वरन उसने आशा व्यक्त की कि उसके सह-विश्वासियों के लिए **दया और शान्ति और प्रेम** बहुतायत से प्राप्त हो। जिस शब्द का अनुवाद "बहुतायत से प्राप्त" (πληθύνω, *प्लेथुनो)* हुआ है, वह वही है जो पतरस की दोनों पत्रियों में पाया जाता है (1 पतरस 1:2; 2 पतरस 1:2)। क्या इस शब्द का चुनाव केवल पसन्द की शैली है या हम इसमें कुछ महत्व जोड़ सकते हैं? यद्यपि शब्दों के चुनाव का महत्व अनिश्चित है, हम कम से कम इतना तो कह सकते हैं: जैसे-जैसे पत्री खुलती जाती है, यह स्पष्ट होता जाता है कि जिन कलीसियाओं को यहूदा ने संबोधित किया वे उस आन्तरिक अशान्ति से ग्रस्त थे जो उन झूठे उपदेशकों के द्वारा आई थी जिनके जैसे उपदेशकों का सामना हम 2 पतरस में करते हैं। मसीहियों के लिए झूठे उपदेशकों से व्यवहार करने से अधिक परेशान करने वाली कम ही बातें हैं। यह उन में परेशानी और अशान्ति उत्पन्न करती है जो शान्ति के प्रभु के, और उस समुदाय से हैं जो परस्पर आदर के प्रति समर्पित है। दया, शान्ति और प्रेम वे गुण थे जिनकी उन मसीहियों को अत्यधिक आवश्यकता थी जिन्हें यहूदा ने संबोधित किया। यहूदा ने उनके लिए यह इच्छा रखी कि ये अच्छे गुण उन्हें बहुतायत से प्राप्त हों।

पत्री के उद्देश्य को परिभाषित करना (3, 4)

[3]हे प्रियो, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था, जिस में हम सब सहभागी हैं; तो मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था। [4]क्योंकि कितने ऐसे मनुष्य चुपके से हम में आ मिले हैं, जिन के इस दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहिले ही से लिखा गया था: ये भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं, और हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं।

आयत 3. अपने परिचय के उपरान्त, यहूदा लगभग क्षमा याचना करने लगा। ऐसा लगता है कि वह उन्हें कुछ समय से **लिखने** का **अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था**। उसकी इच्छा थी कि उन्हें उस साझा विश्वास में बढ़ाए। यहूदा ने आम कलीसिया को कोई निर्व्यैक्तिक पत्री नहीं लिखी। स्पष्टतः उसके मन में कुछ विशेष श्रोता थे। परन्तु इससे पहले कि वह शान्तिपूर्ण बातों के बारे में लिखने पाता, अन्य बातें चित्र में आ गईं थीं। ऐसा हो गया कि उसे बाध्य होना पड़ा कि वह उस परिस्थिति को संबोधित करे जो उसके प्रिय मसीहियों के विश्वास को खतरा उत्पन्न कर रही थीं।

यह महत्वपूर्ण है कि यहूदा ने उस **विश्वास** की **जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था** प्रशंसा की। उसे यह नहीं लगा कि इस तथ्य के लिए कोई तर्क देने की आवश्यकता है कि परमेश्वर ने अपने आप को अपने लोगों पर प्रगट किया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि जब उसने "विश्वास" का उल्लेख किया तो उसका तात्पर्य उस संपूर्ण मसीही शिक्षा से था जो प्रेरितों की गवाही और अधिकार से होकर आई थी। इससे भी आवश्यक यह था कि यह वह सत्य था जो परमेश्वर द्वारा अपने आप को प्रकट करने से आया था। एक मात्र मार्ग जिससे मसीही जान सकते हैं कि किस बात पर विश्वास करें, किसकी आराधना करें, या अपने पड़ौसी से कैसे व्यवहार करें वह है जो परमेश्वर ने कहा है। यहूदा का "विश्वास" से जो तात्पर्य था वह नए नियम में अन्य स्थान पर पाए जाने वाले प्रयोग से थोड़ा भिन्न है। मार्शल ने कहा,

> इस लिए यहाँ बल उस मसीही सन्देश पर है जिसपर विश्वास किया जाना चाहिए न कि विश्वास का भरोसे और समर्पण का कार्य होने पर, परन्तु सुसमाचार के लिए विश्वास शब्द का प्रयोग करना दिखाता है कि विश्वास का कार्य मसीहियत के लिए अविभाज्य है।[3]

पवित्रशास्त्र में परमेश्वर का प्रकटीकरण सृष्टिकर्ता और सृष्टि, परमेश्वर और उसके लोगों के मध्य एक अनुभव हो सकने वाली कड़ी बनाता है। यहूदा के प्राथमिक पाठकों के पास संपूर्ण नया नियम उपलब्ध नहीं हो सकता था। परन्तु वे प्रेरितों में होकर परमेश्वर के प्रकाशन से आए वचन के बारे में जानते थे। इसमें

कुछ समय लगना था जब नए नियम के रूप में वचन के प्रकाशन और लेखन द्वारा परमेश्वर के लोगों के लिए "विश्वास" की बातों का मार्गदर्शन उपलब्ध होता।

जौन स्टौट ने इसे भली-भांति व्यक्त किया: "इससे पहले कि हमें परमेश्वर से बोलने की कोई स्वतंत्रता मिले, परमेश्वर को हम से बोलना है। इससे पहले कि हम उसे आराधना में स्वीकार योग्य अर्पित करें, उसे हम पर प्रगट करना है कि वह कौन है। परमेश्वर की आराधना सदा ही परमेश्वर के वचन का प्रत्युत्तर है।"[4] यहूदा के पाठकों के लिए समस्या यह थी कि दोनों ही उपदेशक, जो पहले उनके पास आए और जो बाद में आए, वे परमेश्वर के सन्देश का दावा कर रहे थे, परन्तु दो भिन्न सन्देश थे। यहूदा ने उन्हें लिखा जिससे वे समझ सकें कि परमेश्वर से कौन सा था।

प्रत्यक्षतः यहूदा ने इन मसीहियों को पहले उस **सहभागी उद्धार** के बारे में लिखना चाह रहा था। परन्तु परिस्थितियों ने इस वर्तमान पत्री को चाहा, जिसकी माँग थी कि वे विश्वास के लिए पूरा यत्न करें। यहूदा ने लिखा मैंने यह **आवश्यक जाना**। कृदंत ποιούμενος *(पोइयोमेनोस)* को अनुमोदन सूचक लेने से अनुवाद होता, "यद्यपि मैं हमारे उद्धार में सहभागी होने के बारे में लिखने के लिए आतुर था," न कि कारण-वाचक, "क्योंकि मैं आतुर था ...।" सुझाव यह है कि कुछ हिचकिचाहट के साथ यहूदा ने उस प्रकार की पत्री लिखी जैसी वह है। उस समय के लिए, जिन मसीहियों को यहूदा ने संबोधित किया वे मसीह को छोड़ देने के खतरे में थे। कम से कम कुछ तो उनमें से झूठे उपदेशकों के द्वारा बहकाए गए थे। जब तक वे विश्वास में स्थिर नहीं हो जाते वे मसीही अनुग्रह में बढ़ने की स्थिति में नहीं थे। हम केवल अनुमान ही लगा सकते हैं कि यहूदा कैसी पत्री लिखता यदि वह उनके "उद्धार में सहभागी होने" के लिए प्रोत्साहन के शब्द लिखता।

"विश्वास," अन्य बातों के अतिरिक्त, उस सामूहिक मसीही शिक्षा के लिए भी उपयोग हुआ है जो प्रेरणा पाए हुए पुरुषों से आई थी। पौलुस के लिए भी, इसका अर्थ हो सकता था मसीही मान्यताएं और व्यवहार (गलतियों 1:23; 1 तिमुथियुस 1:2; 3:9; 4:1, 6; 5:8; 6:10, 21; 2 तिमुथियुस 3:8; 4:7; तीतुस 1:13)। मसीही सिद्धांतों का समूह, कलीसिया का अंगीकार और व्यवहार, यहूदा के पाठकों को प्रेरित शिक्षकों द्वारा दिए गए थे। यहूदा ने उसकी नींव रखी, जो कि आने वाला था। उसका तात्पर्य था कि जो "विश्वास" उन तक आया है, कुछ सीमा तक, वह प्रस्ताव से संबंधित सत्यों और नैतिक अनिवार्यताओं के रूप में था जिसके साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता था।

खेल स्पर्धाओं से लिए गए एक अलंकार के द्वारा याकूब के भाई ने अपने पाठकों से निवेदन किया कि वे उस "विश्वास के लिये पूरा यत्न करें" जो उन्हें दिया गया था। जैसे-जैसे पत्री खुलती जाती है, यह स्पष्ट होता है कि उसका तात्पर्य था कि उन्हें उसमें उन उपदेशकों द्वारा समझौता नहीं करने देना था,

जिनका वर्णन आने वाले परिच्छेदों में दिया गया है। जो शिक्षा प्रेरितों से उन्हें मिली थी वह सम्पूर्ण थी, उनका पूरा मार्गदर्शन कर सकती थी। यह चाहे अनाकर्षक हो, परन्तु एक समय आता है जब मसीहियों को सत्य के लिए खड़ा होना पड़ता है, चाहे इसका अर्थ उनके साथ जो मसीही भाई या बहन कहलाते हैं तीव्र विवाद ही क्यों न हो।

आयत 4. जो "विश्वास" के साथ समझौता कर रहे थे उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से मसीही भरोसे में छल और कपट के द्वारा स्थान पाया था। वे चुपके से आ मिले। संभवतः वे भ्रमणकारी उपदेशक/भविष्यद्वक्ता थे, परन्तु संभव है कि अपने मसीह में परिवर्तन से पहले वे यहूदी अराधनालयों से लंबे समय से जुड़े हुए लोग रहे हों। अराधनालयों में मसीहियों से पूर्व स्पष्टतः ऐसे लोग थे जो यूनानी संसार में बहने वाले दर्शनशास्त्र के प्रवाह की ओर रुझान रखते थे। जब मसीही शिक्षक आए, तो संभवतः उनके सन्देश को स्वीकार करने वाले पहले लोगों में ऐसे लोग थे।

हम सरलता से कल्पना कर सकते हैं कि यूनानी विचारधारा की ओर रुझान रखने वाले यहूदी मसीही स्वतंत्रता को इस सीमा तक ले जाने को तैयार थे कि वह नैतिकता के लिए अनुज्ञपति हो जाए। झूठे उपदेशकों के इस **दण्ड का वर्णन पुराने समय में पहिले ही से लिखा** गया था। उस का कथन सामान्य था। यहूदा का यह तात्पर्य नहीं था कि ये झूठे उपदेशक व्यक्तिगत रीति से पुराने समय से भविष्यवाणी का विषय रहे थे। न ही यह था कि संसार की नींव रखे जाने के समय से वे परमेश्वर की निन्दा करने के लिए पूर्व निर्धारित थे। वरन यहूदा ने यह पुष्टि की कि झूठे उपदेशक परमेश्वर की योजनाओं के आड़े नहीं आ सकते थे। वह उन से व्यवहार कर लेता। परमेश्वर के लोगों के मध्य झूठे उपदेशक पहले भी हुए थे। जैसा उसने सदा किया है, परमेश्वर उनके विनाश को निश्चित कर देता है।

जैसा 2 पतरस में था, झूठे उपदेशक मानवीय प्रवृत्ति की स्वाभाविक भावनाओं को उकसाते थे जिससे कि उन्हें अनुयायी पा लेने का लाभ हो। यहाँ 2 पतरस 2:1-3 के साथ समानन्तर देखिए: (1) उन्होंने एकमात्र स्वामी और प्रभु का इन्कार किया; (2) वे लुचपन करते थे; (3) उनका विनाश पहले से तय था; (4) वे कपट से आए थे।

यहूदा ने "भक्तिहीन मनुष्यों" की दो विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया। पहला, **वे हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं**। इसके साथ ही, उसने कहा, **वे हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह का इन्कार करते हैं**। स्पष्टतः उसका अर्थ था कि मसीही अंगीकार के लिए कुछ आवश्यक पुष्टिकरण की आवश्यकता है जिसका ये उपदेशक या तो पूर्णतः इन्कार करते हैं या उनकी शिक्षाएं और व्यवहार उसके साथ समझौता करते हैं। याकूब के भाई ने उनके इन्कार का कोई खुलासा नहीं किया। उसने यही स्पष्ट किया: मसीही अंगीकार का आरंभ स्थान है "स्वामी और प्रभु।" इसमें निहित है कि व्यक्तिगत विश्वासी के लिए और सामुदायिक कलीसिया के लिए नासरत के यीशु से बढ़कर न तो कोई अधिकारी है, न कोई निष्ठा और न राजभक्ति है।

"मसीह को 'प्रभु' कहने के दो तात्पर्य हैं। यह एक अंगीकार करना है, विश्वास का एक कथन है कि मसीह कौन है। परन्तु मसीह को 'प्रभु' कहने में बड़े बल के साथ एक *समर्पण* निहित है।"[5] झूठे उपदेशकों द्वारा, लुचपन का समर्थन करना और यीशु के प्रभु होने से इन्कार करने की भावना, कोई गौण बात नहीं थी। उन्होंने दोनों, मसीही विश्वास के मूलभूत अंगीकार का और उसके द्वारा माँगी गई जीवन शैली, के साथ समझौता किया था। यदि यहूदा ने उनके विरुद्ध तीखे और सीधे शब्दों की झड़ी लगाई, तो यह यीशु के नाम को अशुद्ध किए जाने से उसे लगने वाली ठोकर के माप के अनुसार है।

अनुप्रयोग

विश्वास के लिए यत्न करना (आयतें 3, 4)

प्रत्येक मसीही, विश्वासियों के समुदाय में होने वाले मतभेदों, भ्रम, और कलह से व्यवहार करने की कोई न कोई विधि विकसित कर लेगा। यह विशेषकर प्रचारकों और उपदेशकों के लिए सही है जो मसीह के कार्य के लिए अपना समय और ऊर्जा व्यय करते हैं। ऐसी कठिनाइयों से व्यवहार करने के लिए दो प्रकार की चरम सीमाएं हैं। कुछ कलीसिया में होने वाले प्रश्नों, मतभेदों, और कलह से इतने अप्रसन्न हो जाते हैं कि वे "भाईचारे के मुद्दों" के प्रति ताने मारकर बात करते हैं। अन्य के पास और कुछ करने के लिए समय ही नहीं होता है और वे एक अच्छा वाद-विवाद सुनने के लिए हज़ार मील जाने को तैयार रहते हैं। यहूदा की पत्री हमें एक इससे अधिक संतुलन पूर्ण व्यवहार की ओर ले जाती है।

हम में से अधिकांश के समान, याकूब के भाई ने कहा कि वह उस साझे उद्धार के बारे में सन्देश बाँटना चाहता था जो उसका अपने पाठकों के साथ था। मसीहियत के एकीकृत करने वाली महान धारणाओं के बारे में लिखना और बात करना उत्साहित करने वाला और विश्वास वर्धक होता है। कोई झूठे उपदेशकों के साथ विवाद क्यों करना चाहेगा जब वह प्रेम, छुटकारे और उद्धार जैसे महान प्रसंगों पर मनन कर सकता है, उनके बारे में बात कर सकता है। यहूदा के लिए यह आवश्यकता की बात थी। उसने समझा था कि मसीह के सन्देश के साथ समझौता हो रहा था और उसके पाठक उस उद्धार को खोने के खतरे में थे जिसमें वे सहभागी थे।

चाहे यह अरुचिकर हो, परन्तु ऐसे समय आते हैं जब विश्वास के लिए पूरा यत्न करना पड़ता है। यहूदा ने इस पत्री के द्वारा जो हमारे समक्ष है, यही किया और अपने पाठकों से निवेदन किया कि वे भी ऐसा ही करें। ये कोई ऐसी पाखण्डी धारणाएं नहीं थीं जो व्यक्तिगत राय से अधिक कुछ नहीं हों। जिन उपदेशकों का यहूदा ने सामना किया उनका सन्देश, यदि उसका अनुसरण किया जाता, तो वह मसीही धर्म का मूलभूत स्वरूप बदल देता।

उदारवाद (आयतें 3, 4)

नए नियम के फरिसियों की प्रवृत्ति थी कि वे ईश्वरीय जीवन को नियमावली बना देते थे। बहुधा वे यीशु के विरोधी होते थे। प्रभु उनके नियमों के बारे में कोई परवाह नहीं करते थे। फरिसियों को बहुधा "विधि-सम्मत" कहा गया है। परिभाषाएं महत्वपूर्ण हैं। विधि-सम्मत वह मनुष्य नहीं है जो परमेश्वर की आज्ञा पालन के लिए सावधान रहता है। वह तो ऐसा व्यक्ति होता है जो प्रत्येक परिस्थिति के लिए एक दृढ़ नियम माँगता है। यदि हर बात के लिए नियम नहीं होंगे, तो वह कुछ बना लेगा। वह परमेश्वर से भी अधिक कड़ा है।

अपनी बाइबलों को खुली रखते हुए मसीहियों को (1) विश्वासियों के मध्य विचार-विमर्श और दृष्टिकोण में मतभेदों, और (2) बाइबल की शिक्षाओं पर बने रहने के मध्य संतुलन बनाए रखना है। हमें यह पहचान लेना चाहिए कि विधि-सम्मत होना एक वास्तविक प्रलोभन है। कलीसिया के सामने यह एक वास्तविक खतरा है, परन्तु हमें सावधान रहना है कि हम "विधि-सम्मत" होने को, उस पर जो हम से सहमत नहीं है, लगाई जाने वाली चिप्पी के समान तो प्रयोग नहीं करते हैं। उदाहरण स्वरूप, कोई व्यक्ति विधि-सम्मत इसलिए नहीं है क्योंकि उसका विश्वास है कि प्रभु भोज को प्रति प्रभु के दिन होना चाहिए। मैं ऐसे लोगों से भी मिला हूँ जो यह सिखाते हैं कि बाइबल की शिक्षा है कि दाखरस को एक ही बर्तन से बाँटा जाना चाहिए। यह मानने के लिए वे अनिवार्य रीति से विधि-सम्मत नहीं हैं। बिना विधि-सम्मत हुए भी व्यक्ति गलत हो सकता है।

"विधि-सम्मत" होने के अतिरिक्त एक और भी शब्द है जिसका लापरवाही से प्रयोग होता है। मैं सुनता हूँ कि मसीही लोग किसी व्यक्ति या बात को "उदार" कहते हैं, परन्तु मैं उस व्यक्ति के बारे में निश्चित नहीं हूँ। यदि उदारवाद बाइबल की शिक्षाओं के साथ इसलिए समझौता करने का नाम है, जिससे कलीसिया संसार के समावेश के लिए स्थान बना ले, तो यह गलत है। यह उस मानसिकता के लिए हो सकता है जो इस बात में अधिक रुचि रखती है कि लोग क्या कहते हैं न कि इसमें कि परमेश्वर ने अपनी कलीसिया को बनने तथा करने के लिए क्या निर्देश दिए हैं। उदारवाद परमेश्वर के वचन के महत्व और उसके निर्देशों का नीचा आकलन करता है।

जैसे हमें सावधान रहना है कि हम "विधि-वादी" शब्द का प्रयोग कैसे करते हैं, उसी प्रकार हमें सतर्क रहना है कि प्रत्येक उस व्यक्ति पर जो हम से सहमत नहीं है हम "उदार" होने की छाप न लगा दें। बिना विधि-वादी हुए भी कोई गलत हो सकता है; वह उदार हुए बिना भी गलत हो सकता है। हमें चेपियाँ लगाने में सतर्क होना चाहिए।

जब हम पवित्र-शास्त्र में अध्ययन के लिए विधि-सम्मत होने के उदाहरण ढूँढ़ते हैं, तो उन्हें पाना कठिन नहीं है। नए नियम के फरीसी इस प्रकार के आत्मिक रोग का चित्रण हैं। पवित्र-शास्त्र में उदारवादी होने का उदाहरण पाना कुछ अधिक कठिन है। हम उन्हें कहाँ पा सकते हैं? नए नियम में ऐसे कौन से झूठे उपदेशक हैं जो उन आत्मिक रोगों को दिखाते हैं जिन्हें हम उदारवाद कहते हैं?

मुझे यहूदा द्वारा झूठे उपदेशकों के वर्णन से बढ़कर कोई अन्य स्थान नहीं मिलता है।

1. *जिन उपदेशकों का यहूदा ने सामना किया वे नए नियम की नैतिकता, भक्ति, और व्यक्तिगत निष्ठा संबंधी शिक्षाओं की उपेक्षा करने या उनके साथ समझौता करने की मानसिक दशा रखने वाले थे।* यहूदा ने ऐसे लोगों के विषय में लिखा जो "भक्तिहीन हैं, और हमारे परमेश्वर के अनुग्रह को लुचपन में बदल डालते हैं" (आयत 4)। उसने कहा, "पिछले दिनों में ऐसे ठट्ठा करने वाले होंगे, जो अपनी अभक्ति की अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे" (आयत 18)।

निश्चय ही यूनानी-रोमी संसार उतना ही दुराचारी था जितना आधुनिक है। चोरी, हत्या, तलाक, वेश्यावृत्ति, गर्भपात, लौंडेबाज़ी, हर प्रकार की यौन-विकृति – हम ने उनका अविष्कार नहीं किया। इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों और परमेश्वर का सदियों से अनादर करता आया है। पौलुस ने लिखा,

> … इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया; यहां तक कि उन की स्त्रियों ने भी स्वाभाविक व्यवहार को, उस से जो स्वभाव के विरुद्ध है, बदल डाला। वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर हो कर जलने लगे (रोमियों 1:26, 27)।

साथ ही उसने कहा, "इसलिये परमेश्वर ने भी उन्हें उन के निकम्मे मन पर छोड़ दिया ... सो वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैर भाव, से भर गए" (रोमियों 1:28, 29)।

मसीह के सुसमाचार ने, सत्यनिष्ठा, वैवाहिक विश्वासयोग्यता, और करुणा द्वारा अपनी पहचान छोड़ी। दूसरी और तीसरी शताब्दी में जब मसीहियों को सताव और घृणा से होकर निकलना पड़ा, उन में से कुछ ने "क्षमा याचनाएं" लिखीं। उन्होंने तर्क दिया कि साम्राज्य के सर्वश्रेष्ठ नागरिक मसीही ही थे।

प्रारंभिक दिनों से ही ऐसे भी थे जो तर्क देते थे कि यदि कलीसिया बहुत सख्त होगी तो लोग अलग हो जाएंगे। इन लोगों का यहूदा ने सामना किया। यहूदा ने दृढ़ता से कहा कि मसीही परमेश्वर को प्रसन्न करें, मनुष्यों को नहीं। परमेश्वर नैतिक निष्ठा की माँग करता है। यदि संसार इसका तिरस्कार करता है, तो जो सदा ही संसार का रवैया रहा है वह उससे बढ़कर और कुछ नहीं करता है। कलीसिया के आरंभिक दिनों से लेकर आधुनिक समयों तक, ऐसे रहे हैं और अभी भी हैं जो वह स्वीकार करने और पालन करने के लिए तैयार हैं जो संसार करता है। यह अपने सबसे निम्न स्तर पर उदारता की आत्मा है।

मसीह की आत्मा पाप के साथ किसी समझौते का प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं करती है, परन्तु जब लोग अपने पाप में भटके और आहत हैं, जब वे अपने जीवन की दिशा बदलकर नई ओर जाना चाहते हैं, तो जो मसीह की सुनते हैं वे पीठ नहीं फेरेंगे। अधिकांश मसीहियों के जीवन में ऐसी बाते हैं जिन्हें वे भुला देना चाहते हैं। कोई मसीही किसी पापी के सिर पर उसके पापों से मारना नहीं चाहता है। यहूदा के शब्द अनुग्रह से भरे हैं: "और उन पर जो शंका में हैं दया करो। और

बहुतों को आग में से झपट कर निकालो; और बहुतों पर भय के साथ दया करो; पर उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है" (आयतें 22, 23)।

पश्चाताप अनुग्रह पूर्ण क्षमा चाहता है, परन्तु मसीह के अनुयायी यह ढोंग नहीं कर सकते हैं कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है यदि मसीही पति अपनी पत्नी से धोखा करे या मसीही व्यापारी लोगों से धोखा करे क्योंकि वह कर सकता है या जब यौन दुराचार सामान्य माना जाए। "उदारवाद" कोई ऐसी चिप्पी नहीं है जिसे उन पर अंधाधुंध लगाया जाए जो हम से मतभेद रखते हैं, परन्तु न ही यह अर्थहीन शब्द है। उदारतावाद व्यक्तिगत रीति से मसीही लोगों को और सामूहिक रीति से कलीसियाओं को नाश कर सकता है और कर रहा है।

2. *यहूदा का सामना ऐसे उदारवादी उपदेशकों से हुआ जिन्हें कलीसिया द्वारा भक्ति, एकमतता, और संचालन के लिए परमेश्वर के निर्देशों में रुचि कम ही थी।* इसका महत्व है कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर की आराधना कैसे करते हैं। यदि किसी विषय पर परमेश्वर ने कोई निर्देश दिए हैं, तो परमेश्वर के लोगों को वही करना चाहिए जो वह चाहता है। एक दिशाभ्रष्ट उदारतावाद समझौता करने के लिए तैयार रहता है। इस प्रकार का उदारतावाद बाइबल पढ़ेगा और कहेगा, "यह व्याख्या की बात है। आप इसकी अपनी रीति से व्याख्या करें, और मैं अपनी रीति से करूँगा।"

बाइबल की व्याख्या करना किसी निर्देश पुस्तिका को पढ़ना तो नहीं है, परन्तु ऐसी तुलना करना कुछ बातों में लाभदायक होता है। हाल ही में मैंने लॉन में प्रयोग आने वाली मेज़-कुर्सी खरीदी जिसे पुर्ज़े जोड़ कर बनाना था। मैंने सावधानी से निर्देशों को पढ़ा, और यह सब करने के बाद भी मैंने कुछ बातों को गलत समझा, इसलिए वापस जाकर उन्हें फिर से करना पड़ा। उनकी सही व्याख्या द्वारा ही आप उन से सहायता पा सकते हैं। जीवन जीना लॉन की मेज़-कुर्सी के पुर्जे जोड़ने से कहीं अधिक जटिल है, परन्तु परमेश्वर ने निर्देश दिए हैं। उनका वही अर्थ है जो परमेश्वर चाहता है कि हो। हम बाइबल की शिक्षाओं को यह कह कर बर्खास्त नहीं कर सकते हैं कि क्योंकि "यह केवल व्याख्या की बात है" इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है।

जब कलीसिया आराधना के लिए एकत्रित होती है, तो इसका महत्व है कि वे कब एकत्रित होते हैं और मसीही सभा में क्या करते हैं। यदि उनके अपने विचारों पर छोड़ दिया जाए तो जो भी उन्हें पसन्द आए लोग उसे ही "आराधना" कहने लगेंगे। ऐसी गतिविधियाँ हैं जिन्हें लोग आराधना कहते हैं परन्तु वे परमेश्वर को कोई आदर नहीं प्रदान करती हैं। हाल ही में मैंने टेलीविज़न पर एक बड़े से चर्च की सभा के सामने व्यायाम करने वालों को करतब दिखाते हुए देखा। उनमें से एक व्यक्ति को अपने हाथों से सीमेंट के खण्डों और मोटे तख्तों को तोड़ते हुए देखा। बाद में साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति से उसने कहा, "जो कुछ भी करो परमेश्वर की महिमा के लिए करो।" मैं सोचने लगा कि क्या उसके ये शब्द एक जेबकतरे या शराब पिलाने वाले पर भी लागू होंगे।

प्रत्येक कार्य जो हम करते हैं – चाहे वह कार्य अपने आप में गलत न भी हो – आराधना नहीं है। हमें परमेश्वर को बताने देना है कि उसे क्या भाता है। नए नियम में हम कलीसिया को वैसे आराधना करते हुए पाते हैं जैसा प्रेरितों ने उन्हें सिखाया था।

ऐसे उदारतावादी हैं जिन्होंने इसे त्याग दिया है कि परमेश्वर ने बाइबल में बताया है कि एक खोया हुआ पापी कैसे उद्धार पा सकता है। अपने सबसे बुरे रूप में उदारतावाद बाइबल में दिए गए उद्धार की योजना के साथ समझौता करवा देता है। प्रेरितों ने जो उद्धार पाने के लिए खोए हुओं से जो करने को कहा वह महत्वपूर्ण है, जो यीशु ने अपने चेलों से कहा जब उसने उन्हें बड़ी आज्ञा के पालन के लिए बाहर भेजा वह महत्वपूर्ण है। यहूदा ने अपनी पत्री का आरंभ अपने पाठकों से निवेदन के साथ किया कि वे "उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" (आयत 3)।

3. *हमें सावधान रहना है कि हम "उदार" तथा "उदारतावाद" शब्दों का प्रयोग कैसे करते हैं क्योंकि "उदार" होना सदा ही बुरा भी नहीं होता है।* देने में उदार होना अच्छी बात है। यीशु उदार थे क्योंकि जिन्हें आवश्यकताएं थीं उन्होंने उन्हें अपने में से मुक्त रूप से दिया। उदार होने का अर्थ हो सकता है कि हम लोगों का भला सोचना चाहते हैं, जो औरों को करते देखते हैं उस पर सबसे अच्छा निर्माण करें। ऐसी महत्वपूर्ण बातें हैं जिनमें कलीसिया को और अधिक "उदार" होने की आवश्यकता है। चाहे यह कठिन ही है, मसीहियों को "उदार" होने के सर्वोत्तम अर्थ में पथभ्रष्ट उदारवाद के साथ, जो उन नैतिक माँगों को त्याग देता है, जो परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है या उन आज्ञाओं को त्याग देता जिन्हें उसने कलीसिया के जीवन के मार्गदर्शन के लिए दिया है।

उपसंहार. अधिकांश मसीही जो वह कलीसिया या संसार में होता हुआ देखते हैं कभी-कभी उससे विचलित हो जाएंगे। विश्वासी को सावधान रहना है कि वह उन लोगों के लिए जो उस के विचारों से असहमत हैं "उदार" और "विधि-सम्मत" शब्दों का प्रयोग कैसे करता है। इन शब्दों को वास्तविक आत्मिक खतरों के लिए लक्षित करना है।

समाप्ति नोट्स

[1]इस शोध-पत्र का प्रतिपादन जौन पेन्टर ने किया, *जस्ट जेम्स: द ब्रदर ऑफ जीसस इन हिस्ट्री एण्ड ट्रैडिशन* (मिनियापोलिस: फोरट्रेस प्रैस, 1999)। [2]आई. हॉवर्ड मार्शल, *न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी: मैनी विटनेसिस, वन गॉस्पल* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 2004), 698-99. [3]पूर्वोक्त, 666. [4]जौन स्टौट, *द कन्टैंपर्री क्रिश्चियन* (लेई सेस्टर, यू.के.: इन्टर-वर्सिटी प्रैस, 1992), 174. [5]चार्ल्स एच. एच. स्कोबी, *द वेज़ ऑफ आवर गॉड: एन अपरोच टू बिबलिकल थियोलॉजी* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 2003), 460.